दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

दिनांकः 21.05.2015

Time : 10.00 am to 01.00 pm | **एम.ए., (प्रथम वर्ष)** | **पूर्णांकः75**

हिन्दी प्रश्न पत्र-1

हिन्दी साहित्य का इतिहास

सूचनाः कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। अंतिम प्रश्न अनिवार्य है।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

2. भक्तिकाल के सामाजिक,राजनितिक, साहित्यिक और धार्मिक परिवेशों पर विचार कीजिए।

3. रीतिसिद्ध काव्य से क्या तात्पर्य है? रीतिसिद्ध काव्य के संदर्भ में बिहारी की चर्चा कीजिए।

4. भारतेंदु कालीन काव्य की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

5. हिन्दी की रेखाचित्र विधि के स्वरूप और विकास का परिचय दीजिए।

6. उपन्यास के विभिन्न तत्वों पर एक लेख लिखिए।

7. छायावाद के प्रमुख कवियों का संक्षेप में परिचय दीजिए।

8. नई कविता की शिल्पगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए–
   1. कबीर की भाषा शैली।
   2. आत्मकथा और जीवनी।
   3. प्रगतिवादः परिभाषा और स्वरूप।
   4. आलोचक गजानन माधव मुक्तिबोध।
   5. जैन साहित्य।
   6. माखनलाल चतुर्वेदी।

****

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

दिनांकः 23.05.2015

Time: 10.00 am to 01.00 pm — **एम.ए., (प्रथम वर्ष)** — **पूर्णांकः75**

हिन्दी : प्रश्न पत्र-3

गद्य साहित्य

I. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए **4x10=40**

1. नाटक के तत्वों के आधार पर ऐतिहासिक नाटक 'स्कंदगुप्त' का विवेचन कीजिए।
2. कविता और सृष्टि प्रसार में क्या संबंध है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
3. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।
4. 'मैला आँचल' की भाषा पर प्रकाश डालिए।
5. कहानी के तत्वों के आधार पर 'भोलाराम का जीव' कहानी की समीक्षा कीजिए।
6. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए।
   - क. महामाया का चरित्र।
   - ख. स्कंदगुप्त का चरित्र चित्रण।
   - ग. मेरीगंज।
   - घ. लोकधर्म का सौंदर्य।

II. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। **5x7=35**

1. त्रस्त प्रजा की रक्षा के लिए, सतीत्व के सम्मान के लिए, देवता, ब्राह्मण और गौ की मर्यादा में विश्वास के लिए आतंक से प्रकृति को आश्वासन देने के लिए आपको अपने अधिकारों का उपयोग करना होगा। युवराज!

   अथवा

   राम और कृष्ण के समान कर्मों को ईश्वर का कर्म समझकर करता है, वही ईश्वर का अवतार है। उठो स्कंद! आसुरी वृत्तियों का नाश करो, सोनेवालों को जगाओ, और रोने को हँसाओ। आर्यवर्त तुम्हारे साथ होगा और उस आर्य पताका के नीचे समग्र विश्व होगा। वीर!

2. युद्ध क्या गान नहीं है? रुद्र का शृंगीनाद, भैरवी का तांडव-नृत्य, और शास्त्रों का वाद्य मिलकर भैरव-संगीत की सृष्टि होती है। जीवन के अंतिम दृश्य को जानते हुए, अपनी आँखों से देखना, जीवन-रहस्य के चरम सौंदर्य की नग्न और भयानक वास्तविकता का अनुभव केवल सच्चे वीर-हृदय को होता है।

   अथवा

   भारत समग्र विश्व का है, और संपूर्ण वसुंधरा इसके प्रेम-पाश में आबद्ध है। अनादिकाल से ज्ञान की मानवता की ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है। वसुंधरा का हृदय-भारत किस मूर्ख को प्यारा नहीं है।

...2..

3. सब प्रकार के शासन में – चाहे धर्म शासन हो, चाहे राज शासन या संप्रदाय शसन–मनुष्य जाति के भय और लोभ से पूरा काम लिया गया है। दण्ड का भय और अनुग्रह का लोभ दिखाकर राज–शासन तथा नरक का भय और स्वर्ग का लोभ दिखाकर धर्म शासन तथा मत–शासन चलते रहे है।

अथवा

अपने निज के लाभवाले विकट कर्म की ओर जो उत्साह होगा। वह तो रसात्मक न होगा, पर जिस विकट कर्म को हम लोक कल्याणकारी समझेंगे, उसके प्रति हमारे उत्साह की गति हमारी व्यक्तिगत परिस्थिति के संकुचित मण्डल से बद्ध रहकर बहुत व्यापक होगी।

4. ''हाँ, यह गोवर्धन शास्त्री कहनेवाले हुए और तुम लोग सुननेवाले, ठीक ही है। लेकिन इससे सुनो, यह तो कह रहे हैं त्रेता की बात, अरे तब तों अकेले बलि ने ऐसा कर दिया था, लेकिन मैं कहता हूँ कलियुग की बात।''

अथवा

तकरीबन–तकरीबन पूरी हो चुकी है! और मैं खुद भी तकरीबन तकरीबन पूरा हो चुका हूँ। अब देखना यह है कि पहले कार्यवाही पूरी होती है कि पहले मैं पूरा होता हूँ। एक तरफ सरकार का हुनर है और दूसरी तरफ परमात्मा का हुनर है!

5. सबेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गयी थी और मुन्नी कह रही थी – क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहाँ आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।

अथवा

''तुम्हें किस बात की कमी है अमर की माँ – घर में बहू है, लड़के–बच्चे हैं, सिर्फ रुपये से ही आदमी अमीर नहीं होता।'

.....